The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research
An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 12 | December 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

अल्मोड़ा जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षणिक चिंता का अध्ययन

डॉ0 देवेन्द्र सिंह चम्याल[1], डॉ0 अजय सिंह लटवाल[2] & शैलजा कार्की[3]
[1]शिक्षा संकाय, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय परिसर, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)
[2]असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, राजकीय महिला पी0जी0 डिग्री कॉलेज, हल्द्वानी
[3]एम0एस–सी0 रसायन विज्ञान, एम0ए0 शिक्षाशास्त्र, एम0 एड0, शोध छात्रा, शिक्षा संकाय, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय परिसर, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)
ईमेल– deepu.chamyal666@gmail.com

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:
अल्मोड़ा, जनपद, माध्यमिक, शैक्षणिक एवं चिंता।

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा अल्मोड़ा जनपद के माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षणिक चिंता का अध्ययन किया है। वर्तमान समय में विद्यार्थी प्रतिस्पर्धा के दौर से गुजरते हैं जिससे छात्र तनावग्रस्त, चिंताग्रस्त एवं भविष्य की चिंताओं में डूबे रहते हैं। छात्रों की चिंता सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों रूपों में है। सकारात्मक चिंता छात्रों की उपलब्धियों का मार्ग प्रशस्त करती है एवं नकारात्मक चिंता छात्रों को मानसिक तनाव एवं गंभीर अवसाद की ओर अग्रसर करती है। चिंताग्रस्त छात्र पढ़ाई पर सही से ध्यान नहीं दे पाते एवं उनकी प्रगति पर चिंता का बहुत बुरा असर पड़ता है। प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को सरल यादृच्छिक न्यादर्श विधि के अंतर्गत लॉटरी पद्धति द्वारा 100 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में चिंता का अध्ययन करने हेतु प्रो0 एस0के0 पाल, डॉ0 करूणा शंकर एवं डॉ0 कल्पना पाण्डेय, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा निर्मित शैक्षणिक चिंता मापनी का उपयोग किया गया है।

प्रस्तावना– शिक्षा जीवन पर्यंत चलने वाली एक सोद्‌देश्य प्रक्रिया है। इसके द्वारा बालक की जन्मजात शक्तियों का विकास किया जाता है। वर्तमान समय में छात्रों का मूल्यांकन ग्रेड, रिपोर्ट, अवलोकन और स्वयं की प्रतिभागिता के आधार पर किया जाता है। प्रतिस्पर्धा के कारण बालक चिन्तित, दुखी और कभी–कभी अच्छे प्रतिभागी भी नहीं बन

पाते जिससे वह चिन्ता ग्रस्त हो जाते हैं। चिंता एक प्रकार से किसी प्रक्रिया में रुकावट समझी जाती है। एक व्यक्ति जो चिंता से पीड़ित होता है, किसी कार्य को करने में पूर्ण शक्ति का प्रयोग नहीं कर पाता। इस प्रकार यह विचार किया जाता है कि चिंता क्रिया में रूकावट डालती है और इस तरह सीखने की गति में कमी आ जाती है। किन्तु यह विचार पूर्णतया सत्य नहीं है और जो चिंता के कार्य को ठीक से न समझने के कारण है। वास्तव में चिंता सीखने में रुकावट भी डाल सकती है और इसको प्रेरित भी कर सकती है। **बुग्लेस्की** के अनुसार अवधान सीखने में एक प्राथमिक तत्व है। अवधान पुरस्कार की इच्छा, दंड से बचने की इच्छा जिज्ञासा, इत्यादि के परिणाम स्वरुप होता है, किंतु अवधान के लिए मूल वस्तु दुश्चिंता है। **बुग्लेस्की** का कथन है कि जिज्ञासा जागृत की जाती है तो दुश्चिंता उत्पन्न हो जाती है। क्योंकि जिज्ञासा दुश्चिंता का गुप्त रूप है। विद्यार्थी की जिज्ञासा जागृत करनी चाहिए और उन्हें ऐसे कार्य देने चाहिए जिनमें वह सफल हों।

सुलीवन ने देखा है कि शिशु ने परेशानी, झुंझलाहट के भाव प्रदर्शित किए और खाने से मना करना प्रारंभ किया जबकि उसकी माता प्रसन्न थी या निराशा से भरी थी। यहाँ तक देखा गया कि उस समय भी जब माता उन घटनाओं से परेशान थी जो बालक से किसी भी प्रकार संबंधित नहीं थी, तब भी बालक में दुश्चिंता प्रकट हो गई।

जो चिंता सबसे पहले शैशव काल में अनुभव करते हैं वही जीवनभर हमारे व्यवहार पर प्रभाव डालती है। यह उस समय प्रकट हो जाती है जबकि दूसरे हमारी आलोचना करते हैं, झिड़की देते हैं अथवा हमें त्याग देते हैं। जितना महत्व का हमारे लिए हमें त्यागने वाला व्यक्ति होगा और जितना अधिक दबाव हमारे ऊपर होगा उतनी ही अधिक हमारी चिंता होगी। हमारा अपना व्यवहार भी चिंता उत्पन्न कर देता है। ऐसा उस समय होता है जब हम अपने को ऐसा व्यवहार करते पाते हैं, जो हमारे अपने आत्मा के प्रति असंगत है। वे स्थितियां जो अस्पष्ट हैं, या भावात्मक है, वह भी दुश्चिंता उभारती है। भविष्य दुश्चिंता का एक बड़ा स्रोत है क्योंकि इसमें अनिश्चितता होती है। इसी कारण हम भविष्य के लिए योजना बनाते हैं और ऐसी सावधानियां लेते हैं कि भविष्य में इतना अनिश्चित ना रहे।

एलिसन एवं इसके परीक्षण जो चलचित्र से सीखने में दुश्चिंता का प्रभाव पता करने के लिए थे, इस परिणाम पर आए कि दुश्चिंता के स्तर को बढ़ाने में प्रशिक्षण के प्राप्त अंकों में वृद्धि होती है।

चंद्रा (2019) ने किशोरों की शैक्षणिक चिंता और मानसिक स्वास्थ्य के बीच संबंध शीर्षक का वर्णनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य किशोरों की शैक्षणिक चिंता और मानसिक स्वास्थ्य के बीच संबंध का पता लगाना था। परिवर्तनीय लिंग और स्थान को भी ध्यान में रखा गया। हरियाणा राज्य के रोहतक जिले के 160 छात्रों का एक नमूना याच्छिक रूप से चुना गया था। नमूना सिंह और गुप्ता द्वारा बच्चों के लिए शैक्षणिक चिंता स्केल के माध्यम से प्रशासित किया गया था और मानसिक स्वास्थ्य बैटरी सिंह और सेनगुप्ता द्वारा विकसित और मानकीकृत की गई थी। मीन, एस0डी0 और सह संबंध के गुणांक का उपयोग डेटा के विश्लेषण और व्याख्या के लिए किया गया था। निष्कर्षों से पता चला कि किशोरों की शैक्षणिक चिंता और मानसिक स्वास्थ्य के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं देखा गया। इसके अलावा, महिला किशोरों, पुरुष किशोरों, ग्रामीण और शहरी किशोरों की शैक्षणिक चिंता और

मानसिक स्वास्थ्य के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं पाया गया। अतः उपरोक्त समस्याओं को देखते हुए शोधार्थी ने अपनी समस्या में माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की शैक्षणिक चिंता का अध्ययन को सम्मिलित किया है। चिंता को एक प्रकार का मानसिक स्वास्थ्य विकार माना जाता है जो लोगों को भय चिंता आशंका और अत्यधिक घबराहट की ओर ले जाता है। शैक्षणिक चिंता ऐसी स्थिति है जिसमें छात्र–छात्राएं अपने शैक्षणिक प्रक्रिया के प्रति अत्यधिक चिंतित होते हैं। प्रस्तुत शोध में अल्मोड़ा जनपद को लिया गया है। प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा अल्मोड़ा जिले के 06 माध्यमिक विद्यालयों को चुना गया है। शोध कार्य हेतु माध्यमिक विद्यालयों में 09वीं तथा 10वीं कक्षा में अध्ययनरत कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं को सम्मिलित किया गया है। प्रस्तुत शोध में केवल 10 अध्ययन आदतों के आयामों को सम्मिलित किया गया है। शैक्षणिक चिंता, जाति, लिंग, विद्यालय का प्रकार, निवास स्थान, संकाय, विद्यालय का प्रकार, पारिवारिक संरचना, व्यावसायिक पृष्ठभूमि, परिवार में सदस्यों की संख्या।

शोध विधि– प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि प्रयुक्त की गयी।

जनसंख्या– प्रस्तुत शोध कार्य में उत्तराखण्ड राज्य में स्थित अल्मोड़ा जिले के अंतर्गत समस्त सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 9वीं एवं कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में लिया गया है।

न्यादर्श– प्रस्तुत शोध कार्य हेतु अल्मोड़ा जनपद के 06 माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा नौवीं एवं कक्षा दसवीं के 100 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है।

न्यादर्श चयन विधि– प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को सरल यादृच्छिक न्यादर्श विधि के अंतर्गत लॉटरी पद्धति द्वारा चुना गया है।

शोध उपकरण– शोध कार्य हेतु माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में चिंता का अध्ययन करने हेतु शैक्षणिक चिंता मापनी उपकरण का उपयोग किया गया। यह उपकरण प्रो0 एस0के0 पाल, डॉ0 करूणा शंकर एवं डॉ0 कल्पना पाण्डेय शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा निर्मित किया गया है। इस शैक्षणिक चिंता मापनी में 35 कथन दिये गये हैं।

प्रदत्तों का अंकीकरण– कथनों में हाँ उत्तर के लिए 1 अंक व नहीं उत्तर के लिए शून्य अंक प्रदान किये गया है।

उपकरण की विश्वसनीयता– उपकरण की विश्वसनीयता परीक्षण–पुनः परीक्षण विधि द्वारा निर्धारित की गई थी। विश्वसनीयता ज्ञात करने के लिए प्रोडक्ट मोमन्ट सह–सम्बन्ध ज्ञात किया गया था। सह सम्बन्ध का मान 0.66 (N=50) था।

वैधता– उपकरण में 10 विशेषज्ञों को सामग्री की वैधता को निकालकर 'फेस वैलेडिटी' निकाली गई। छोटे से अंतराल में टेस्ट को तीन शोध अध्ययनों में प्रयुक्त किया गया।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी विधि– प्रस्तुत अध्ययन में परिकल्पनाओं का परीक्षण करने तथा निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं 'टी' फलांक/परीक्षण निम्न सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

आकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या– प्रदत्तों के संकलन के पश्चात उनका क्रमबद्ध तरीके से विश्लेषण किया जाता है। प्रदतों के विश्लेषण से अध्ययन में प्राप्त सूचनाओं को संक्षिप्त रूप से स्पष्ट करने का प्रयास किया जाता है। प्रस्तुत अध्याय में शोधकर्ता द्वारा प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण परिकल्पनाओं के आधार पर किया गया है।

तालिका 4.1 माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं का उनके विद्यालय के प्रकार के आधार पर शैक्षणिक चिंता का मध्यमान, मानक विचलन व t-मान

क्र0 सं0	विद्यालय का प्रकार	न्यादर्श आकार	मध्यमान	मानक विचलन	t-मान	सार्थकता स्तर
1	सरकारी	50	9.98	6.31	4.01	0-01
2	गैर–सरकारी	50	14.84	5.83		

D.F. = 98

उपरोक्त तालिका 4.1 से ज्ञात होता है कि छात्र और छात्राओं के मध्यमान प्राप्तांकों के आधार पर t-मान 4.01 है, जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर t- तालिका मान 2.63 से अधिक है, गणना से प्राप्त t-मान .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

अतः स्पष्ट होता है कि अल्मोड़ा जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं का उनके विद्यालय के प्रकार के आधार पर शैक्षणिक चिंता में अन्तर है। उपरोक्त तालिका के मध्यमान के आधार पर कहा जा सकता है कि गैर–सरकारी विद्यालयों के छात्रों की शैक्षणिक चिंता अधिक है। इसका कारण यह हो सकता है कि गैर–सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं के लिये अभिभावकों द्वारा अधिक व्यय किया जाता है, जिसका दबाब छात्रों पर हो सकता है।

अतः स्पष्ट होता है कि विद्यालय के प्रकार के आधार पर विद्यार्थियों के शैक्षणिक चिंता पर प्रभाव पड़ा है।

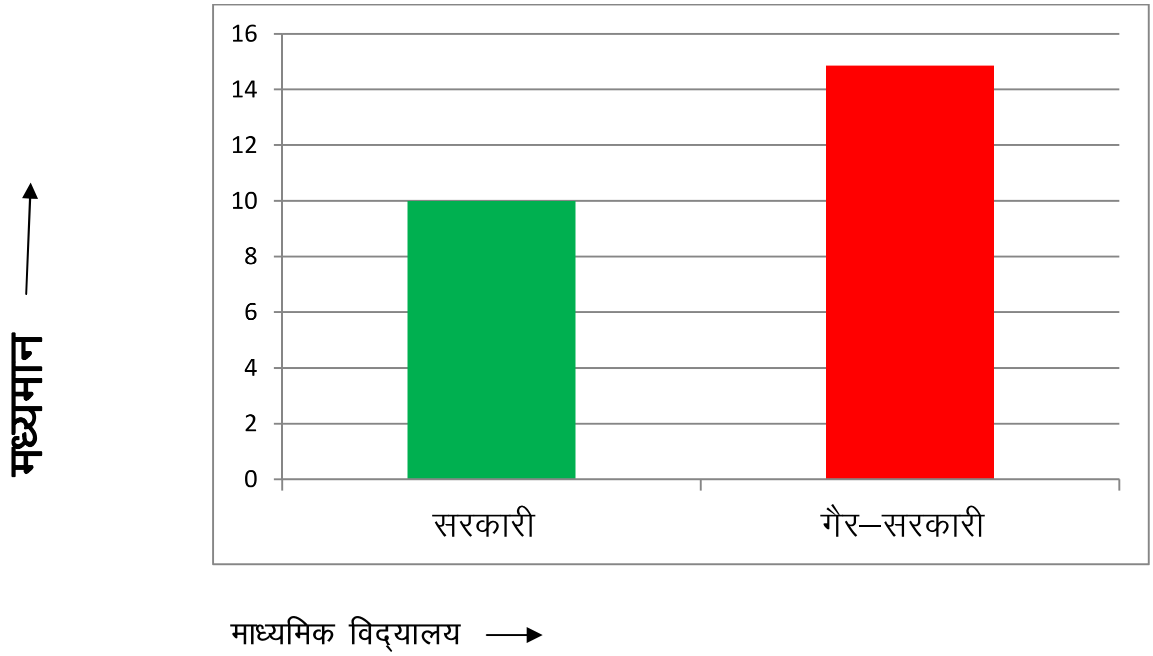

चित्र 4.1 सरकारी व गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं का शैक्षणिक चिंता का मध्यमान

अतः परिकल्पना–01 "माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् छात्र छात्राओं का सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों के आधार पर शैक्षणिक चिन्ता में कोई अंतर नहीं है।" अस्वीकृत प्रतीत होती है।

तालिका 4.2 माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं का उनके लिंग के आधार पर शैक्षणिक चिंता का मध्यमान, मानक विचलन एवं t-मान

क्रं0 सं0	लिंग	न्यादर्श आकार	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	सार्थकता स्तर
1	पुरूष	50	14.5	6.00	4.11	0-01
2	स्त्री	50	9.64	5.89		

D.F. = 98

उपरोक्त तालिका 4.2 से ज्ञात होता है कि छात्र और छात्राओं के मध्यमान प्राप्तांकों के आधार पर t-मान 4.11 है जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर तालिका मान 2.63 से अधिक है। इसलिए गणना से प्राप्त t-मान 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः स्पष्ट होता है कि अल्मोड़ा जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं का उनके लिंग के प्रकार के आधार पर शैक्षणिक चिंता में अंतर है। उपरोक्त तालिका में मध्यमान के आधार पर कहा जा सकता है कि पुल्लिंग छात्रों की शैक्षणिक चिंता अधिक है। इसका कारण यह हो सकता है कि पुल्लिंग छात्रों को अभिभावकों द्वारा दबाब डाला जाता है कि उनको अच्छा प्रदर्शन करना है। लिंग के आधार पर छात्रों की शैक्षणिक चिंता में अंतर है।

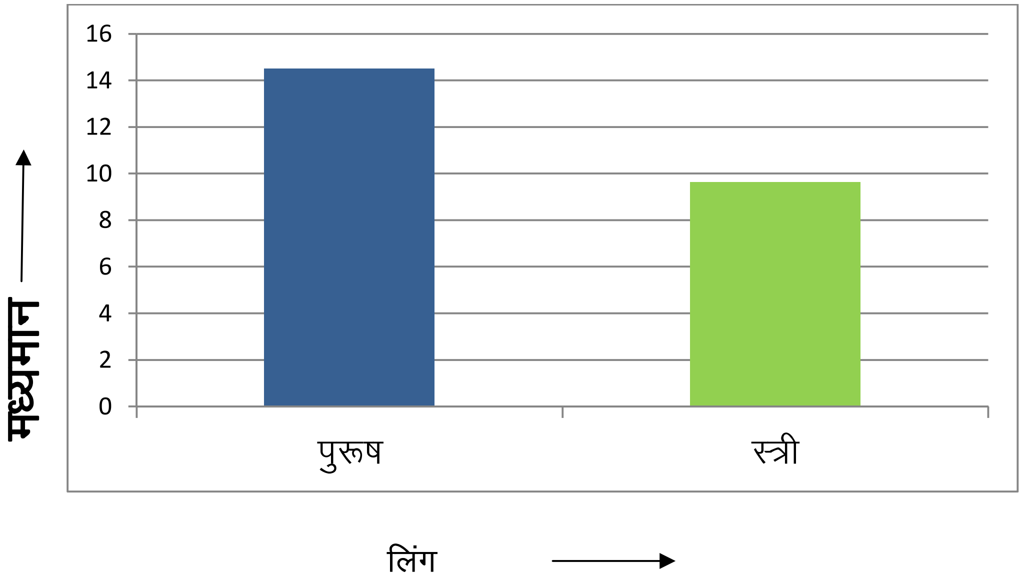

चित्र 4.2 माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत पुरूषों व स्त्रियों का शैक्षणिक चिंता का मध्यमान

अतः परिकल्पना–02 "माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं का उनके लिंग के आधार पर शैक्षणिक चिंता में कोई अंतर नहीं है।" अस्वीकृत प्रतीत होती है।

तालिका 4.3 माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं का उनके संकाय के आधार पर शैक्षणिक चिंता का मध्यमान, मानक विचलन एवं t मान

क्र0 सं0	संकाय	न्यादर्श आकार	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	सार्थकता स्तर
1.	विज्ञान	53	13.86	6.53	2.03	0.05

2.	कला	47	11.29	6.20		

D.F.= 98

उपरोक्त तालिका 4.3 से ज्ञात होता है कि छात्र और छात्राओं के मध्यमान प्राप्तांको के आधार पर t-मान 2.03 है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर तालिका मान 1.98 से अधिक है, इसलिये गणना से प्राप्त t-मान 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

अतः स्पष्ट होता है कि अल्मोड़ा जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं का उनके संकाय के आधार पर शैक्षणिक चिंता में अन्तर है। उपरोक्त तालिका में मध्यमान के आधार पर कहा जा सकता है कि विज्ञान वर्ग के छात्रों की शैक्षणिक चिंता अधिक है। जिसका कारण यह हो सकता है कि विज्ञान वर्ग के छात्र अपने विषय को जटिल मानते है। अतः स्पष्ट होता है कि संकाय के आधार पर छात्रों की शैक्षणिक चिंता में अन्तर है।

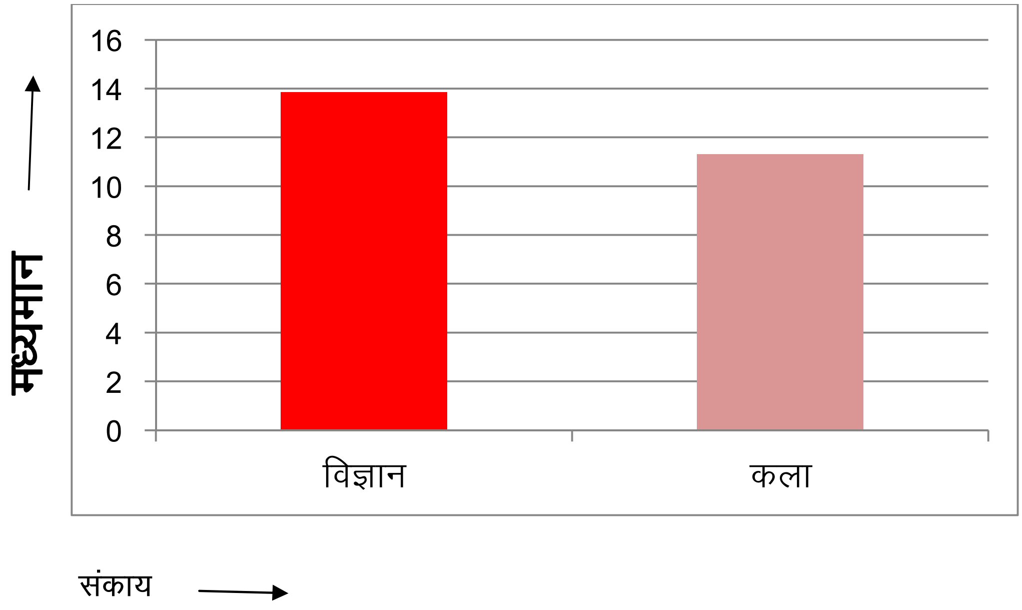

चित्र 4.3 माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विज्ञान वर्ग व कला वर्ग के छात्र–छात्राओं का शैक्षणिक चिंता का मध्यमान

अतः परिकल्पना–03 "माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं का विज्ञान व कला संकाय के आधार पर शैक्षणिक चिंता में कोई अंतर नहीं है।" अस्वीकृत प्रतीत होती है।

अध्ययन के निष्कर्ष– प्रस्तुत अध्ययन के आकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या के पश्चात निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं–

1– अल्मोड़ा जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं का उनके विद्यालय के प्रकार के आधार पर शैक्षणिक चिंता में अन्तर है। मध्यमान के आधार पर कहा जा सकता है कि गैर–सरकारी विद्यालयों के छात्रों की शैक्षणिक चिंता अधिक है।

2– अल्मोड़ा जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं का उनके लिंग के आधार पर शैक्षणिक चिंता में अंतर है। मध्यमान के आधार पर कहा जा सकता है कि पुल्लिंग छात्रों की शैक्षणिक चिंता अधिक है।

3– अल्मोड़ा जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं का उनके संकाय के आधार पर शैक्षणिक चिंता में अन्तर है। मध्यमान के आधार पर कहा जा सकता है कि विज्ञान वर्ग के छात्रों की शैक्षणिक चिंता अधिक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. कपिल, एच०के० & सिंह, ममता (2013)। *सांख्यिकी के मूल तत्व*। आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
2. कौल, एल० (2012)। *शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली*। नोएडा: विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड।
3. कौल, एल0 (2019)। *शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली*। नई दिल्ली: हाउस प्राइवेट लि०।
4. गुप्ता एस0पी0 & गुप्ता अलका (2009)। *उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान*। इलाहाबाद शारदा पुस्तक भवन।
5. गेरैट, एच०ई० (2000)। *शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग*। लुधियाना: कल्याणी पब्लिशर्स।
6. पलोड़, सुनिता & लाल, आर०बी० (2008)। *शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग* / मेरठ: आर०लाल बुक डिपो।
7. पाठक,पी०डी (2007)। *भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ*। आगरा–2: विनोद पुस्तक मन्दिर।
8. राय, पी० & राय, सी० पी० (2012)। *अनुसंधान परिचय* । आगरा: लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।
9. सिंह, ए0के0 (2010)। *उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान*। दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।

10- Aggarwal, J. C. (1981). *Theory and principles of Education*. New Delhi: Vikas Publishing House PVT LTD.

11- aggarwal, Y.P.(2013). *Statistical methods; concepts applications and computations*. New Delhi: Sterling Publishers Private Limited.

12- Baghel, D.S.(2024). *Research methodology*. Agra: S.B.P.D. publications

13- Best, J. W., & Kahn, J. V. (2014). *Research in education.* Delhi: PHI Learning Private Limited.

14- Bhatnager, R.P.(2007). *Reading in methodology of research in Education*. Meerut: R. Lall book depot.

15- Guilford, J.P.(1978). *Fundamental statistics in psychology and Education*. Aukland: Mc Graw Hill book company.

16- Gupta, S. (2005). *Education in emerging India*. Delhi: Shipra publication.

17- Mathur, S.S. (2013). *Educational psychology*. Agra: B.P. Printer.

18- Mukerji, S. N. (1958). *An introduction to Indian Education*. Baroda: Acharya book depot.

19- Seetharamu, A.S. (1989). *Philosophies of Education.* New Delhi: Ashish Publishing House.

20- Sharma, Jyoti (2015). *Measurement and Evaluation in Education*. Agra: Agrawal Publication.

21- Taneja, V. R. (1986). *Educational Thought and Practice.* New Delhi: Sterling Publishers Private Limited.

वेबसाइट

www.google.com

www.sodhganga.inflibnet.ac.in

https://pib.gov.in

www.amarujala.com